समकालीन कविता में स्त्री चिन्तन

डा. गीता दुबे

कवि को ब्रह्मा कहा जाता है। जैसे ब्रह्मा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सृष्टि करते हैं, उसी तरह कवि भी रचना जगत की सृष्टि करता है। इस रचना जगत में कुछ ऐसी विलक्षणताएं होती हैं, जिसके कारण समालोचकों को यह कहना पडता है -जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि। महर्षि वाल्मीकी के युग से लेकर आज तक यह कविता मन्दाकिनी निरवच्छिन्न भाव से बहती आ रही है, और हमारा पूरा समाज इसमें गोते लगाता रहा है। कविता की इस महान् परम्परा को समीक्षा सौविध्य के लिए अनेक खण्डों में विभाजित किया जाता है, जिसमें एक खण्ड का नाम समकालीन कविता है।

मैं समकालीन कविता को कुछ इस रूप में देखती हूँ कि कवि जब कविता की रचना कर रहा होता है, कवि की अन्तरिन्द्रियों एवं बाह्य इन्द्रियों को जो सामाजिक घटनाएं झकझोर रही होती हैं, कवि के हृदय एवं नाडियो का जैसा स्पन्दन चल रहा होता है, उन्हीं सबका परिणाम जब कविता के रूप में परिणत होता है, तो वह समकालीन कविता शब्द प्रयोग की दृष्टि से कहलाने के लिए हकदार होती है। किन्तु अर्थ दृष्टि से जिस युग में हम लोग जी रहे हैं, जिस आसमान में हम सब सांस ले रहे हैं, वहाँ की जो उपलब्ध कविताएं हैं वही समकालीन कविताएं होती हैं। इन कविताओं के अनन्त एवं असंख्य विषय होते हैं परन्तु एक नारी होने के नाते मैं कुछ समकालीन कविताओं में उलझती हुई, विहुंसती हुई, विलखती हुई एवं समाज के सामने एक आदर्श उपस्थित करते हुए नारी को ढूँढने का प्रयास अपने शोध पत्र में कर रही हूँ।

कवयित्री ममता कालिया की **खाटी घरेलू औरत** कवि विश्वनाथ तिवारी की **फिर भी कुछ बचा रहेगा** एवं कवयित्री सुनीता जैन की **चौखट पर** व **उठो माधवी** की कुछ कविताओं के माध्यम से नारी की यथास्थिति से रूबरू होने का एक छोटा प्रयास है।

आज हम 21 वीं सदी में आ गये हैं। इस दृष्टि से देखने पर पता चलता है कि, मात्र कुछ स्त्रियों के जीवन स्थिति में बदलाव आया है बाकी कुछ मजबूर औरतें आज भी अपने अस्तित्व की तलाश कर रही हैं। स्त्री के सम्मान घर से शुरू होता है किन्तु यह सौभाग्य बहुत कम को ही मिल पाता है। पुरुष प्रधान समाज होने के कारण उसे अनेक प्रकार की वर्जनाओं का सामना करना पडता है। हमारा सामाजिक ढांचा ही ऐसा है कि सम्मानजनक एवं स्वतन्त्र अस्तित्व के लिए सतत संघर्ष करती दृष्टिगत होती है। खाँटी घरेलू औरत की समस्याओं एवं उसके उत्पीड़न को ममता कालिया ने बड़े कौशल के साथ चित्रित किया है।

खाँटी घरेलू औरत को घर के बैठक में स्थान नहीं है रसोई में रखी तिपाई पर यदि उसे नींद आ जाती है तो घर का मालिक डाँटना शुरू कर देता है। सवेरे के आलस्य में जब घर के लोग नींद ले रहे होते हैं तो, वह घरेलू औरत घर के सभी काम समेट लेना चाहती है,पानी भरने नल पर जाती है, उसे बिजली का पड़ा हुआ तार रस्सी नजर आता है, और वह उससे चिपक जाती है, चिल्लाने पर एक व्यक्ति उसे बचाता है, और स्वयं मौत के मुँह में चला जाता है, होश आने पर वह सहमी सी घर आती है, घर पर सहानुभूति प्रकट करना तो दूर उसके ऊपर अनेक प्रकार के लांछन लगाये जाते हैं। पति ने क्या कहा इन पंक्तियों में प्रकट है -

पति का भेजा, चाय न मिलने से तन्नाया,
वह भन्नाया

सुबह-सुबह नलके पर जाकर
करती है तू रोज छिनाला
बता कौन था मरने वाला।
यों ही नहीं किसी की खातिर
कोई अपनी जान गँवाता
क्या था उसका तेरा नाता
लात और घूंसों से उसकी हुई पिटाई।[1]

इस चरित्रहीनता का आरोप एक स्त्री के जीवन को हिला कर रख देता है किन्तु पुरुष पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

वह पितृसत्तात्मक परम्पराओं की आदी हो गयी है जिस दिन विरोध जताई उस दिन आदर्शनारी से पदच्युत हो जायेगी। बार-बार आहत होने पर जब अपनी खोई प्रतिभा वापस लाना चाहती है और अपने कार्य में सफल हो जाती है तो पुरुष उसकी कामयाबी में अपनी भूमिका किस तरह महत्त्वपूर्ण बताता है -

यह बिलकुल कोरी आई थी
कस्बे की छोरी आई थी
मैंने इसे जतन जागर से गढ़ा, पढ़ाया,योग्य बनाया
आला कुर्सी तक पहुँचाया।
कितना भी दफ्तर संभाल ले
नयी अकल से तीर मार ले
मैं हूँ इसका छवि निर्माता, छाप नियन्ता
अभिनव नारी का अभियन्ता।[2]

प्रायः कहा जाता है कि एक कामयाब पुरुष के पीछे एक महिला का हाथ होता है, ठीक वैसे ही मान लेना पड़ता है - कि एक कामयाब औरत के पीछे पुरुष का हाथ होता है और वह घरेलू औरत पुनः बनने लगती है। शादी से पहले पिता के घर में लड़की चाहे कितनी लायक हो किन्तु शादी के बाद उसकी सारी प्रतिभा लुप्त हो जाती है। बेवाक बोलने वाली लड़की शादी के बाद कुछ भी माता-पिता से कहते सौ बार सोचती है। ससुराल के सभी रिश्ते निभाते-निभाते उसे अपने विषय में सोचने के लिए समय ही नहीं होता है वह हर समझौते करती है जिससे गृहस्थी अच्छे से चलती रहे।

कड़वाहट भरी जिन्दगी जीते-जीते कभी-कभी उसके मन में स्वयं को बदलने की भावना भी उठती है, किन्तु धनाभाव एवं समयाभाव के कारण धीरे-धीरे ये भावना शांत हो जाती है। घरेलू औरत अपना दुःख दर्द भी बताने से बचती है उसे लगता है कि शायद सुनने वाला कोई नहीं है।

खाँटी घरेलू औरत की आँखों में कोई सपना नहीं रह जाता है। उसके जीवन में विश्राम भी नहीं होता उसका दिन काम में एवं रात्रि उधेड़बुन में निकल जाती है। आराम के लिए एवं मनोरंजन के लिए कोई समय

नहीं होता है। किस प्रकार पूरा सप्ताह व्रत पूजा पाठ में बीत जाता है कवयित्री ने अच्छा वर्णन किया है। सबको घर से काम पर भेजने वाली घरेलू औरत जब आराम कुर्सी का आनंद लेते हुए अखबार पढ़ने का समय निकालती है तो वहाँ भी खबरों के बाद गृहस्थी में भविष्य में काम आने वाली चीजों को प्रमुखता से देखती है। ममता जी घर और बाहर दोनों जगह उसकी कार्य कुशलता देखकर एक नटी की संज्ञा देती हैं। घरेलू औरत जब घर से बाहर होती है तब भी उसका मन घर में ही होता है। वह सदैव दूसरों के लिए जीती है कवयित्री कहती हैं-

क्या ये कभी अपनी तरह जीने की
आजादी पायेंगी या
इसी तरह आदर्शों के पुराने लत्ते
सीने पिरोने में खप जायेंगी। [3]

पति के लिए समर्पण भाव रखने वाली स्त्री सदैव समर्पित दिखाई देती है पति के विमुख होने एवं विश्वासघात होने पर भी वह पति के सुधरने का इन्तजार करती है। आदर्श, शील एवं नैतिकता से युक्त जीवन जीते-2 उसके अन्दर तनाव,डर आदि घर कर लेते हैं इस प्रकार जीवन समाप्ति पर नजर आने लगता है। ठीक ही कहा गया है कि विवाह के बाद नारी का दूसरा जन्म होता है। जब कभी बेटी जीवन से हताश होकर पिता के पास पहुँचती है और अपनी समस्या से अवगत कराती है तो पिता के ये शब्द सभी बेटियों के लिए प्रेरणास्पद हैं-

मैं क्या मानूं
मैंने पलायनवादी, दब्बू दुबकी,
चुप चीटी को जन्म दिया है
दायित्वों के दावानल में खड़ी हुई हो
क्यों रोती हो।
ये दो बेटे
या दो प्रहरी
काटेंगे तेरे कर्त्तव्यों की दोपहरी।
चयन का वैभव तुम्हारा था, तुम्हारा है
छोड़ दो भय, भीति शंका
रवि तुम्हारा है।
तुम नहीं हो देवि, जो सन्तुष्ट सब जन हो।[4]

कवयित्री आह्वान करती हैं कि स्त्री आंसू बहाने न बैठकर अपनी शक्ति को पहचाने। कर्तव्य निभाते हुए अपने सम्मान के प्रति जागरूक रहें और **एक दिन पति पहुँचे घर** कविता में जागरूक स्त्री की तस्वीर देखी जा सकती है।

एक दिन पति पहुँचे घर

****

वे थाली पीट-पीटकर माँग रही हैं वे.....
पच्चीस साल का वेतन, ओवर टाइम और बोनस।[5]

इस प्रकार 'आज नहीं मैं कल बोलूंगी' पैंतीस साल मैंने घर' लोग कहते हैं' आदि कविताओं के माध्यम से स्त्रियों की आवाज बुलन्द की गयी है। गृहस्थी में कुशल पैतृक संस्कारों से युक्त अपने दुःखों को अपनों से छिपाते तिल-तिल समाप्त होते देख कवयित्री उसकी खूबियों को पहचानकर उद्वेलित होती हैं और वह उन्हें जागृत करने की कोशिश कर रही है।

भारतीय मूल्यवादी दृष्टि में आस्था रखने वाले विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ऐसे कवि हैं जिनमें यथार्थ और सादगी के बीच अनुभव की गहनता दृष्टिगत होती है। ममता जी की तरह तिवारी जी ने भी स्त्री की दयनीय स्थिति देखते हुए उसके विभिन्न रूपों को विविध सन्दर्भों में प्रस्तुत किया है। ' स्त्री की तीर्थयात्रा ' कविता में कवि ने एक स्त्री की दुनियां को बड़ी अच्छी तरह पहचानते हुए सुबह बिस्तर छोड़ने से लेकर शाम को बिस्तर पर जाने के बीच के क्रियाकलापों का बहुत ही यथार्थ वर्णन किया है। स्त्री के सुबह के कार्यों के विषय में कवि कहता है -

सवेरे-सवेरे
उसने साफ किये
घर-भर के जूठे बर्तन
झाड़ू पोछे के बाद
बेटियों को संवारकर
स्कूल रवाना किया
सबके लिए बनाई चाय।[6]

सुबह का काम समेटने के बाद भगवान की पूजा के लिए समय निकालती है किन्तु पूजा को बीच में ही छोड़कर उठना पड़ता है क्योंकि छोटा बच्चा रोने लगा। वह अपने को हर परिस्थिति में ढालने का प्रयास करती है। उसका जीवन घर के लोगों के लिए समर्पित है उसकी जिन्दगी में आराम के लिए कोई जगह नहीं है। दोपहर का भोजन समाप्ति पर था कि उसी समय एक मेहमान का आगमन होता है वह घर की स्त्री जो सिर्फ सेविका है दाल में पानी मिलाकर अतिथि सत्कार किया और स्वयं चटनी रोटी खाती है। इसके बाद स्कूल से मुरझाई बेटी का आगमन हो जाता है इसके बाद शाम की रसोई में जुट जाती है। इस तरह की स्थिति अधिकतर स्त्रियों के जीवन में आती रहती है। सब के प्रति समर्पित स्त्री को खाना सबके खाने के बाद नसीब होता है जिसमें सब्जी आदि कुछ भी उसकी पसन्द का नहीं होता। वह इस जीवन से खुश नहीं है वह जी नहीं बल्कि रो रही है। कवि की निम्न पंक्तियों से इसका परिचय मिल जाता है -

बिस्तर पर गिरने से पहले
वह अकेले में थोड़ी देर रोई
अपने स्वर्गीय बाबा की याद में।[7]

इससे पता चलता है कि वह मायके में खुश थी ससुराल की जिन्दगी से वह खुश नहीं है। स्त्रियों की स्थिति में बदलाव तो आया है किन्तु उतना नहीं जितना होना चाहिए। **भय** कविता में भयभीत एक ऐसी स्त्री को चित्रित किया है जो अपने गोद में लिए लाल के सहारे सब मुसीबत झेलने के लिए तैयार है-

विदा हो रही है स्त्री
सड़क किनारे
पीपल के नीचे जमा है कुछ स्त्रियां
जो बस में चढ़ा देती हैं उसे
लाल आँचल में लिपटा
अबोध शिशु है उसकी गोद में
जो लाल है और उसका ढाल भी
जिसके सहारे वह झेल लेगी तीर-तलवार
आँखे पोंछती है वह पल्लू से
चश्में के भीतर मैं भी पोंछता हूँ
आँखें अखबार की ओट में
गो कि फर्म है पुरुष -स्त्री के आँसुओं में। [8]

स्त्री को तरह-तरह के विज्ञापन करते स्वयं स्त्री के पास कुछ न बच पाने के लिए चिन्तित है। इसी प्रकार मजबूर एवं असुरक्षित स्त्री की चिन्ता भी कवि को सताती है। ' स्त्री विहीन रेल का डिब्बा ' कविता में स्त्री - पुरुष के अनुपात में आ रहे असन्तुलन पर कवि चिन्तित है। बेटी की वास्तविक जिंदगी शादी के बाद शुरू होती है। मायके से उसका पूरा सम्बन्ध टूट जाता है। माता-पिता की साँसों में भले वह स्थित रहे पर वास्तविकता यही है। बेटी के विवाह में खुशी का वातावरण होता है ऐसे समय में भी भयभीत बेटी के पिता के दर्द को इन शब्दों में कवि ने व्यक्त किया है-

हाथ काँप रहे तुम्हारे, पिता
काँप रही थाली
गंगा में आ गई बाढ़, माँ तुम्हारे आंसुओं से
बारात सजी है दरवाजे
पगड़ी बाँधे खड़े हैं बाराती।[9]

स्त्री की स्थिति पर कवि ने बड़ी संवेदना एवं सहानुभूति के साथ अपने भावों को व्यक्त किया है। स्त्री की दयनीय हालत, विषमता, साम्प्रदायिकता एवं दहशत भरे माहौल से अवगत कराते ' फिर भी कुछ बचा रहेगा ' कविता के माध्यम से उसे बचाने की अपील करते देख सकते हैं ।

जीवन की भागम भाग में इन्सान में रिशतों की गरमाहट बचाने तथा मानवीय मूल्यों का समर्थन करती सुनीता जैन की कुछ कविताएं मानवता का आधार स्तम्भ कही जा सकती है। ये कविताएं इन्सान को एक नयी सोच एवं दिशा देती प्रतीत होती हैं। **तह में** कविता में माँ से उसकी पूंजी लेने वाले बच्चों के पास इतना समय नहीं है कि वे सब ये जानने की कोशिश करें कि माँ ने यह सब कैसे जमा किया। बुरे वक्त पर काम आने के लिए

छिपाकर रखा था। किन्तु अपनी इच्छा के विपरीत बेटों की जरूरतों को के लिए देती है ऐसी माँ के उस काम को बच्चे भूलते नजर आते हैं जिससे माँ सहम सी जाती है उसे ठेस पहुँचती है। बेटों के व्यवहार को देखकर एवं बुरे वक्त के लिए पोटली में कुछ न बचने से माँ कहती है-

माँ नहीं डरती
अपनी भूख या उम्र से
वह डरती है
अपने ही बेटे के
सख्त पड़ गये मुख से
अगली दफे जब
वह माँगेगा कुछ रुपये
दो या पाँच हजार
कैसे कहेगी तब
कि कुछ भी नहीं है उसके पास
माँ डरती है अपने ही
बेटे के बढ़ते शक से। [10]

इस प्रकार यदि देखा जाय तो हमारे समाज में स्त्रियों की स्थिति कभी भी बहुत अच्छी नहीं रही है। वृद्धावस्था में तो स्त्री-पुरुष दोनों की स्थिति शोचनीय हो जाती है। वृद्धावस्था में बेटे बहू का सहारा नहीं है और कोई भी उसकी जिम्मेदारी उठाने के लिए तैयार नहीं है। अंधेरी होती शाम और अपनों से दूर अकेले तड़पती वृद्ध स्त्री का सुनीता जैन ने कटु सत्य एवं मर्मस्पर्शी पंक्तियों में वर्णन किया है। उन पंक्तियों को देखकर हठात् गुप्त जी की पंक्ति याद आ जाती है- नारी जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी...। एकदम अकेली, शांत एवं द्रवित स्त्री की स्थिति से परिचय कराते हुए कवयित्री कहती है कि वह किस प्रकार अपने अतीत और वर्तमान को स्मरण करते जीवन को बिता रही है। जो कभी पूरे घर का भरण-पोषण करती थी आज वह कितनी अकेली और मजबूर है। अकेलेपन से जूझती हुई स्त्री का हृदयस्पर्शी वर्णन इस प्रकार किया है - तब/एक-एक कर/याद आते हैं-/नहीं, पास आते हैं/ दिवंगत माँ/बहन छोटी/परदेस बसा बेटा,बेटी/ ।[11] परदेस के नाम पर मुझे त्रिलोचन की वह कविता याद आती है जिसका नाम है - चम्पा काले काले अच्छर नहीं चीन्छती चम्पा पढ़ी लिखी नहीं है और न ही उसे पढ़ना लिखना पसन्द है उसे लगता है कि जो पढ़ते हैं वे बाद में गाँव छोड़कर चले जाते हैं। वह अनपढ़ लड़की पलायन के खिलाफ है।

लोगों की जीवन शैली में आये परिवर्तन के कारण आत्मीयता का अभाव होने, अकेले एकाकीपन और घुटन के कारण जीवन को नीरस होते देखकर कवयित्री सुनीता जैन आत्मीयता अपने पन आदि भावों को जीवित रखना चाहती है। क्योंकि यही वास्तविक जीवन है। पिता, भिक्षुक, संन्यासी, राजा द्वारा नारी से वस्तु बना दी गयी माधवी इसका उदाहरण है। ऐसी माधवी जिसमें जीवन को पीड़ा व्यथा से भरते देख बड़ी आत्मीयता से माधवी की व्यथा को कम करने के लिए सीता, उर्मिला, अनुसूया, कुन्ती,सावित्री की याद दिलाती हैं, और माधवी के आत्मबल की प्रशंसा करती हैं। नारी सम्बन्धी चिन्तन को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान

करने वाली यह कविता गवाह है स्त्री संसार के उत्पीड़न एवं दुःख भरती हुई दुनियां की और पाठक वर्ग को सोचने एवं समझने के लिए बेचैन एवं विवश अवश्य करती है। निर्मला पुतुल का काव्य संग्रह **नगाड़े की तरह बजते शब्द** की कविताएं स्त्री विमर्श की दिशा में एक सार्थक पहल है इसकी चर्चा फिर कभी होगी।

इस प्रकार कुछ समकालीन अल्प कवितओं के माध्यम से मैंने स्त्री सम्बन्धी चिन्तन को सामने रखने का अल्प प्रयास किया है , अभी उसके विषय में बहुत कुछ बाकी है। इस यात्रा से यही तथ्य सामने आया है कि खाना बनाना घर की देखभाल करना, परिवार के बच्चों बूढ़ों की सेवा करना स्त्री का ही काम है चाहे वह खेती करे, मजदूरी करे, टीचर हो डॉक्टर हो, कॉरपोरेट में हो बच्चे की देखरेख स्त्री का काम है। औरत पिता, पति और पुत्र की सम्पत्ति है। इन सबके बीच मैं कहना चाहूँगी कि **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता** कथन यूं ही नहीं कहा गया होगा इस पर विचार करना चाहिए। सभी शिक्षित वर्ग को मिलकर सामने आने पर शायद इस आधी जनसंख्या को सही न्याय मिल पाये। अभी स्त्री विमर्श में बहुत कुछ बाकी है। स्त्रियाँ भी अपने दायित्वों को निभाते हुए स्वयं को समझने की कोशिश करें। स्त्री पुरुष के सामूहिक प्रयास से हर समस्या का समाधान सम्भव है।

सन्दर्भग्रन्थसूची -

1. ममता कालिया ' खाँटी घरेलू औरत', पृष्ठ-52.
2. ममता कालिया ' खाँटी घरेलू औरत', पृष्ठ-60-61.
3. ममता कालिया ' खाँटी घरेलू औरत', पृष्ठ-45.
4. ममता कालिया ' खाँटी घरेलू औरत', पृष्ठ-80.
5. ममता कालिया ' खाँटी घरेलू औरत' , पृष्ठ-64.
6. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ' फिर भी कुछ बचा रहेगा ' पृष्ठ-57.
7. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ' फिर भी कुछ बचा रहेगा ' पृष्ठ-58.
8. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ' फिर भी कुछ बचा रहेगा ' पृष्ठ-25.
9. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ' फिर भी कुछ बचा रहेगा ' पृष्ठ-56.
10. सुनीता जैन ' चौखट पर व उठो माधवी ' , पृष्ठ- 12.
11. सुनीता जैन ' चौखट पर व उठो माधवी ' , पृष्ठ- 23.
12. नयी सदी की हिन्दी - कविता - डॉ.राधा वर्मा।

हिन्दी विभाग
राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान
क.जे. सोमैया संस्कृत विद्यापीठ
विद्याविहार, मुम्बई, महाराष्ट्रम् -77

****